











# संपादकीय नई लोकसभा पहला सत्र

नई 18वीं लोकसभा का पहला सत्र बड़ी उम्मीदों के साथ शुरू हुआ। 18वीं लोकसभा का बहु-प्रतीक्षित उद्घाटन सत्र 24 जुलाई को शुरू हुआ। यह भारत के लोकतांत्रिक इतिहास में मील का पत्थर है। थोड़े कम बहुमत से 'राजग' की सत्ता में वापसी हुई है, पर 17वीं लोकसभा की तुलना में सदन बहुत संतुलित है जब 'राजग' का प्रचंड बहुमत था। लेकिन अब राजनीतिक परिदृश्य काफी बदल गया है जो नई लोकसभा के कामकाज में दिखाई देगा। वास्तव में इस सत्र की प्राथमिकतायें अगले पांच साल के लिए भारत का मार्ग निर्धारित करेंगी। 18वीं लोकसभा का पहला सत्र पहले ही दिन विवादों में घिर गया। 'इंडिया' समूह के नेताओं ने सोमवार को संसद में विरोध प्रदर्शन किया, जबकि उस समय संसद के नव-निर्वाचित सदस्यों का शपथ ग्रहण चल रहा था। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिङ्गुन खड़गे, पार्टी नेता सोनिया गांधी तथा समाजवादी पार्टी नेता अखिलेश यादव जैसे प्रमुख नेताओं ने भाजपा नीति 'राजग' सरकार के खिलाफ प्रदर्शन करते हुए संविधान की प्रतियां लहराई। अन्य केन्द्रीय मंत्रियों तथा नव-निर्वाचित संसदों का शपथ ग्रहण प्रोटोम अध्यक्ष भटूहरि महातब द्वारा कराया गया। 'इंडिया' समूह के जो कांग्रेस सदस्य संसदीय समिति में शामिल थे, उन्होंने नव-निर्वाचित संसदों की शपथ ग्रहण प्रक्रिया में सहायता देने से इनकार कर दिया। उन्होंने प्रोटोम अध्यक्ष के रूप में भाजपा संसद भटूहरि महातब की नियुक्ति का विरोध किया और वे अपने पसंदीदा उम्मीदवार आठ बार के संसद कांग्रेसी के, सुरेश को इस पद पर लाना चाहते थे। हालांकि, सुरेश के रिकार्ड में व्यवधान है, जबकि भाजपा संसद भर्तहसिरि



संयुक्त सत्र को 27 जून को संबोधित करेगी। मजदूरार बात है कि इस सत्र में एक दशक में पहली बार नेता विपक्ष की नियुक्ति होगी। इस सत्र के विवादास्पद होने की आशंका है क्योंकि विपक्ष भाजपा नीति 'राजगं' को अनेक मुद्दों पर चुनौती देना चाहता है जिसमें 26 जून को अध्यक्ष प्रोट्रेम अध्यक्ष की नियुक्ति पर विवाद शामिल हैं। विपक्ष का इरादा बढ़ती कीमतों, खाद्य मुद्रास्फीति, भयानक लूप के कारण होने वाली मार्मतें तथा परीक्षायें सचालन करने में हालिया 'अनियमितताओं' जैसे मामले उठाना है। उम्मीद है कि 18वीं लोकसभा आर्थिक प्रगति को प्राथमिकता देते हुए मुद्रास्फीति पर नियंत्रण तथा रोजगार सृजन की दिशा में काम करेगी। नए सत्र से सामाजिक न्याय पर ध्यान केन्द्रित कर असमानताएँ संबंधी मुद्दों पर गौर करते हुए आर्थिक प्रगति के लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुंचाने की उम्मीद है। इसके साथ ही जम्मू में हुए आतंकी हमलों को देखते हुए भारत के रणनीतिक हितों और सुरक्षा सरोकारों पर भी 18वीं लोकसभा में चर्चा होने की आशा है। देश के विभिन्न हिस्सोंमें सुरक्षा तथा कानून-व्यवस्था स्थापित करने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस सत्र से न केवल विधायी ढांचा तय होगा, बल्कि विविधातापूर्ण व गतिशील राष्ट्र की महत्वाकांक्षायें भी परिभाषित होंगी। भारत आज चुनौतीपूर्ण वैशिक परिदृश्य में अपने लिए मजबूत व समतापूर्ण मार्ग तलाशने का प्रयास कर रहा है।

अभिनय की  
खूबसूरती इस  
बात में निहित  
है कि अभिनेता  
किरदार को  
किस हद तक  
आत्मसात कर  
लेते हैं।

**ब्रह्मकुमार निकुंज**  
(लेखक, आध्यात्मिक  
गानेश के लिए)



# हम कर रहे जीवन की पटकथा का मंचन

**हाल** ही में भारतीय फिल्म उद्योग के एक दिग्गज अभिनेता को उनके अधिनय करियर के माध्यम से दुनिया भर में सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार में उनके योगदान के लिए सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार दिया गया। जब उन्हें पुरस्कार दिया जा रहा था, तो दर्शकों में से हर कोई खड़े होकर उस महान व्यक्ति के प्रति बहुत प्यार और सम्मान के साथ खड़े होकर उनका अभिनावन कर रहा था, जिसने सेल्युलाइड स्क्रीन पर इतने सारे करियरों को जीवंत किया।

हम सभी ने सिनमाधार में इस उत्साह का अनुभव किया है, जब कोई वीर किरदार स्क्रीन पर एंट्री करता है, तो जोरदार जयकारे, सीटियां, तालियां और बहुत कुछ अभिनेता अवसर एक दर्शक बन जाता है और अपने काम की आलोचना करता है ताकि वह अपने अभिनय को बेहतर बना सके। यह उनके द्वारा निभाई जाने वाली

होता है। और फिल्म के अत में, नायक दर्शकों का दिल जीत लेता है और शो को चुरा लेता है। चाहे वह राजकुमार की भूमिका निभाए या भिखारी की, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उसके प्रशंसक उसकी एक झलक पाने के लिए सिनेमाघरों में उमड़ पड़ते हैं।

उनके अधिनय को खुबसूरती इस बात में निहित है कि वह किरदार को इस हत्या तक आत्मसात कर लेते हैं कि वह औं औं उनका किरदार उनके प्रशंसकों को एक ही लगाने लगता है। लेकिन ऐसा करते हुए भी वह इस तथ्य के प्रति बहुत सचेत रहते हैं कि वह किसी विशेष नाटक में केवल एक अधिनेता हैं, उनकी भूमिका गाढ़ी गई है औं उनके संवाद लिखे गए हैं औं वेषभूषा उस विशेष चरित्र के लिए डिजाइन की गई है इसलिए, उनकी महानता केवल अपने क्षमता के अनुसार भूमिका निभाने में निहित है। स्टारडम की अपनी लंबी यात्रा में, हमें

A photograph showing three silhouetted figures against a bright red curtain. From left to right: a man in a t-shirt and shorts, a woman in a dress with her right arm raised, and another man in a t-shirt and shorts. The lighting creates strong highlights on the curtain and deep shadows on the figures.

विभिन्न भूमिकाओं से अलगाव का तत्व है जो उन्हें आगे बढ़ने, स्पष्टता के साथ एक साथ कई भूमिकाएं निभाने और फिर दिन के अंत में अपने निजी जीवन में लौटने की अनुमति देता है। हम में से बहुत से लोग नहीं जानते कि विश्व चक्र इस नाटक के समान है जिसमें हम सभी अद्वितीय भूमिकाओं वाले अभिनेता हैं। हर कोई अपने जीवन में नायक है और एक नायक बन सकता है जो तालियाँ बटोर सकता है। हालाँकि, आज हम शायद ही किसी को दूसरे व्यक्ति की जय-जयकार करते हुए पाते हैं। क्योंकि, एक-दूसरे के प्रदर्शन स्क्रिप्ट से बहुत असंतोष है। नतीजतन नाटक एक तासदी बन गया है। अभिनेता के अपने प्रदर्शन की बजाय एक-दूसरे प्रदर्शन की आलोचना करने से व्याप अराजकता फैल गई है। इस परेशानी का कारण यह है कि हममें से ज्यादातर लोग यह जाने बिना ही अभिनय करते हैं। धरती एक रंगमंच है और हम सभी यह अपनी-अपनी भूमिकाएं निभाने आए हैं। दूसरे, हर अभिनेता की भूमिका अलग अलग पहले से तय होती है और इसलिए हम

किसी और की भूमिका से मिलाने की कोशिश करना बेकार है। तीसरे, दुनिया के नाटक का सबसे बड़ा नियम यह है कि यह हमेशा सबके लिए फायदेमंद होता है। इस समझ या इसकी चेतना के अभाव में, हम अपनी भूमिकाओं से जुड़ जाते हैं, अपनी वेशभूता और मेकअप बदलना भूल जाते हैं और हर भूमिका के हिसाब से ढलने की लचीलापन खो देते हैं। एक ऐसे व्यक्ति का सरल उदाहरण लें जो एक ही समय में बेटा, पति, पिता, दोस्त और कई अन्य भूमिकाएं

निभाता है।  
अगर वह पुरुष होने की चेतना में है, तो वह घर पर अपनी पत्नी पर हाथी हो सकता है या दफ्तर में अपनी महिला कर्मचारियों को नीची नजर से देख सकता है। काम पर, वह बॉस होने की अपनी भूमिका से इतना चिपका रहेगा कि वह उनका सहकर्मी बनना ही भूल जाएगा। दूसरी ओर, यदि वह इस बात से अवगत है कि वह एक अभिनेता है और उसे नायक की तरह सभी का दिल जीतना है, तो वह अपनी भूमिका की आवश्यकताओं को समझेगा और जो भी वह करेगा, उसमें

क्रिय, स्टोक और आकर्षक होगा। हम भी किरदार निभाते हैं, उसके उत्तर-चाव को जीते हुए, हम खुद को थका देते और प्रत्येक भूमिका की माँगों को पूरा करने या दृश्यों में उत्तर-चाव को अच्छी तरह से झेलने के लिए पर्याप्त शक्ति नहीं रहती है, जिसके परिणामस्वरूप बनात्मक उथल-पुथल होती है और दुख का नियमित आगंतुक बन जाता है, जबकि टक का उद्देश्य अभिनेताओं को खुशी और आनंद का अनभव करना है।

दूसरी ओर, यदि हम अपनी भूमिकाओं  
विवरक हो जाते हैं और इस शास्त्रवत्  
यम पर विश्वास रखते हैं कि नाटक  
वधूभौमिक लाभ के लिए लिखा गया है,  
हानि और लाभ, आराम और दर्द की  
वनाएं खत्म होने लगेंगी और हमारा मन  
दृश्य में होने वाले घटनाक्रम पर सवाल  
बना बंद कर देगा।

इसलिए, कहानी का नैतिक यह है कि  
मैं विवरक होना चाहिए और फिर भी हम  
भूमिका निभा रहे हैं, उसमें शामिल होना  
हिए। इस विश्व नाटक में सुपरस्टार बनने  
यही गुण है।

केजरीवाल का संकट

एक देश एक चुनाव

समय व आर्थिक बोझ का तकाजा है कि अब एक देश, एक चुनाव की अवधारण लागू होनी चाहिए। यह समय, त्रम व धन की बरबादी कों रोकने वाली होगी। वर्तमान कानूनी प्रावधानों के अनुसार लोकसभा व विधानसभा चुनाव में एक ही उम्मीदवार दो स्थानों से चुनाव मैदान में उत्तर सकता है। दोनों सीट पर उसकी जीत की स्थिति में छोड़ी गई सीट पर पुनः उपचुनाव होते हैं। इसी तरह लोकसभा व विधानसभा चुनाव में पहले से चुने गए सांसद व विधायक इन सदनों के चुनाव में उम्मीदवार बना दिए जाते हैं। जीतने पर उन्हें एक पद छोड़ा पड़ता है। इस बार के लोकसभा चुनाव में कई दलों के विधायक सांसद चुने गए हैं। इससे विधायक पद त्यागने पर पुनः कई स्थानों पर विधानसभा उपचुनाव कराने पड़ेंगे। यह देश और खुन-पसीना बहा कर कमाने वाली जनता के संसाधनों की बरबादी है। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में गठित समिति ने एक देश-एक चुनाव मुद्दे पर राजनीतिक दलों व विशेषज्ञों से व्यापक विचार-विमर्श कर इस व्यवस्था के पक्ष में अपनी सहमति दी थी तथा उसे लागू करने की रूपरेखा भी सुझाई थी। राजनीतिक दलों को इस पर

हिजाब की पैरवी

ओवैसी की पार्टी वी करती रही है, एक के स्कूल-हना है कि हिजाब का अनिवार्य अंग एशिया के मुस्लिम लोगों ने हिजाब के लिए रोक लगा दी है। न कर सकता है। इमोन के राष्ट्रपति इमोन ने हिजाब को एक मानकर इस पर का ऐलान किया हिजाब पहनने पर कर 5 लाख रुपए प्रावधान रखा गया। गान सरकार ने यह

मौसम की मार

गंगठन वल्र्ड वेदर ब्लूडब्ल्यूप द्वारा किए क्षण में चौंकाने वाले अपने आए हैं। तापमान छुट्ट हुई है जो चालू वर्ष 2015 है। पृथ्वी के उत्तरी भूमि पर यह देखा गया है कि इसम से पहले भौषण और आती है, यानी लूस स वर्ष सबसे अधिक रण सारी दुनिया के व बढ़ा है। पूरी दुनिया गैसों के उत्सर्जन में हुई है। इसी तरह वाले के बढ़ते उपयोग से गर्मी पैदा हो रही है तथा प्रदूषण बढ़ रहा है। ऐसी गर्मी से होने वाले हीट स्ट्रोक का खतरा बढ़ने का अनुमान है। इसमें शरीर की शीतलन प्रणाली पूरी तरह से ध्वस्त हो जाती है और अगर समय रहते इलाज नहीं किया जाता है तो मौत भी हो सकती है। दक्षिण पश्चिम अमेरिका, ग्वाटेमाला, मैक्सिको, हॉंडुरास, बेलीज और अल साल्वाडोर में किए सर्वेक्षण में ये चौंकाने वाले नतीजे आए हैं। इस प्रकार इन्सानों के साथ ही सभी प्रकार के जीव-जंतुओं पर मौसम की मार लगातार गंभीर होती जा रही है।











